e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 6, June 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.423

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 6, June 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1206146 |

प्रवासी हिन्दी कविता में देश प्रेम

डॉ० सुरेन्द्र कुमार, *एसोसिएट प्रोफेसर*
दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हिसार–125001, हरियाणा
e-mail: skkbishnoi@gmail.com

'प्रवासी' शब्द 'प्र + वस् + घञ्' से बना है जिसका अर्थ है– 'विदेश गमन', विदेश यात्रा' 'घर पर न रहा', 'अपना घर या देश त्याग कर दूसरे देश में निवास करना' आदि। प्रवासी का अर्थ होता है– प्रवास करने वाला यानि परदेश में रहने वाला। यदि हम भारत के 'प्रवासी साहित्य' की बात करें, तो सीधा सा अभिप्राय होगा– 'विदेश में बसे भारतीय (प्रवासी) द्वारा रचित साहित्य। 'विदेशों में बसे भारतीयों ने जो हिन्दी भाषा में साहित्य लिखा है वह 'प्रवासी हिन्दी साहित्य' है। प्रश्न यह भी उत्पन्न होता है कि क्या प्रवासी हिन्दी साहित्य, हिन्दी साहित्य से अलग हैं? इसका संक्षिप्त उत्तर यही है कि 'प्रवासी साहित्य' का मूल्यांकन एक अलग मापदंड के तहत किया जाता है। इसलिए यह हिन्दी साहित्य का अभिन्न होते हुए भी अपना पृथक् अस्तित्व और महत्त्व रखता है। डॉ० दुर्गा प्रसाद अग्रवाल ने लिखा है– 'यह अवश्य है कि जिस साहित्य में प्रवासी भारतीयों की जिन्दगी का चित्रण है, उसे एक अलग वर्ग के रूप में विश्लेषित किया जा सकता है। 'चन्द्रमौलेश्वर प्रसाद इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए लिखते हैं– 'प्रवासी साहित्य वही होगा जो प्रवासी भारतीय लिख रहे हैं और जिसमें वे ऐसी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं जो सभी को सम्प्रेषित हो, भले ही उसमे देशी शब्द हो या विदेशी हो जो समझ में आए।'

'प्रवासी हिन्दी साहित्य' पर प्रकाश डालते हुए डॉ० कमल किशोर ने लिखा है– 'प्रवासी साहित्य हिन्दी का साहित्य है, जिसका रंग, रूप, उसकी चेतना और संवेदना भारत के हिन्दी पाठकों के लिए नई वस्तु है, एक नये भावबोध का साहित्य है– एक नई व्याकुलता और बेचैनी का साहित्य है, जो हिन्दी साहित्य को अपनी मौलिकता एवं नये साहित्य संसार से समृद्ध करता है। इस प्रवासी साहित्य की बुनियाद भारत प्रेम व स्वदेश–परदेश के द्वन्द्व पर टिकी है। 'इसी बात को आगे बढ़ाते हुए राजी सेठ लिखते हैं– 'हिन्दी साहित्य लेखन की मुख्यधारा में वृद्धि, समृद्धि और विश्वास का वातावरण पैदा करेगी। इतना ही नहीं, प्रवासी भारतीयों के इस योगदान के चलते सांस्कृतिक राष्ट्रीय धरातल पर उनका स्थान भी सुरक्षित करेगी। हिन्दी लेखन की मुख्यधारा को ऐसी समावेशिता के लिए कृतज्ञ होना होगा। 'प्रवासी हिन्दी साहित्य' को हिन्दी साहित्य का अभिन्न अंग घोषित करते हुए तमिलनाडू हिन्दी अकादमी के अध्यक्ष बालशौरि रेड्डी ने 'प्रवासी आवाज' की भूमिका में लिखा है– 'हिन्दी का साहित्य जहाँ भी रचा गया हो और जिसने भी रचा हो, चाहे वह जंगलों में बैठकर लिखा गया हो, खलिहानों में, देश में हो या विदेश में लिखने वाला कोई आदिवासी हो या अमेरिका के भव्य भवनों का रहवासी वर्ण, जाति, धर्म और वर्ग की सोच से परे अपनी अनुभूतियों को अगर हिन्दी भाषा में कलात्मक स्वरूप देता है, तो वह लेखक हिन्दी भाषा में लिखने वाला कलमकार होता है और उसका रचा साहित्य हिन्दी का ही साहित्य है।'

इसमें तो कोई संदेह नहीं है कि विश्व के किसी भी कोने में हिन्दी में लिखा गया साहित्य हिन्दी का ही साहित्य है। फिर भी अपनी अनुभूति, संवेदना व संप्रेषण के कारण प्रवासी हिन्दी साहित्य अपने पृथक् विवेचन का अधिकार रखता है। इसलिए यह साहित्य 'प्रवासी हिन्दी साहित्य' के रूप में अपनी एक अलग पहचान की मांग भी करता है।

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 6, June 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1206146 |

उन्नीसवीं शताब्दी के अनेक मजदूर आन्दोलनों ने ब्रिटेन के उपनिवेशों में कामगार लोगों का संकट उत्पन्न कर दिया था। अंग्रेजों ने अपने उपनिवेशों में मजदूरों की कमी को दूर करने हेतु अनेक प्रकार के लालच व भय दिखा कर भारतीयों को वहां पहुँचाना आरम्भ किया था, यहीं से प्रवासी भारतीयों की कहानी शुरू होती है। सर्वप्रथम भारतीय मजदूर 1834 ई. में मॉरीशस पहुंचे थे. ये उसके बाद 1845 में त्रिनीदाद (वेस्टइंडीज), 1860 में दक्षिण अफ्रीका, 1870 में गुयाना, 1873 ई. में सूरीनाम, 1879 ई. में फीजी पहुंचे थे। इसके बाद अन्य बहुत से देशों में भी भारतीय जा कर बसे। अंग्रेजों का उपनिवेशवाद समाप्त होने पर व भारत को आजादी मिलने के बाद भारतीय स्वेच्छा से इग्लैण्ड, अमेरिका, फ्रान्स, कनाड़ा, जर्मन आदि विकसित देशों के साथ–साथ विश्व के 100 से अधिक देशों में जा कर रहने लगे। उपर्युक्त देशों के अतिरिक्त रूस, चीन, जापान, ओसाका, इटली, इजराईल, न्यूजीलैंड, सिंगापुर, थाइलैण्ड, डेनमार्क, नार्वे, पौलेण्ड, नीदरलैंड आदि देशों में भी अच्छी–खासी संख्या में भारतीय प्रवासी रहते हैं। अधिकांश भारतीय प्रवासी व्यवसाय या नौकरी के उद्देश्य से ही इन देशों में बसे है।

प्रवासी भारतीय देश छोड़ते समय केवल अपना शरीर ही लेकर नहीं गये थे, बल्कि अपनी संस्कृति, धर्म, साहित्य, भाषा व संवेदना को भी संजोकर ले गये थे। वहाँ जा कर उन्होनें कमर तोड़ परिश्रम के साथ–साथ अपनी संस्कृति को भी अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए भी संघर्ष किया है। उनके संघर्ष व श्रम का ही परिणाम है कि आज विश्व के अनेक देशों में भारतीय संस्कृति फल–फूल रही है। इन प्रवासी भारतीयों ने अपनी आत्मानुभूति को भी अभिव्यक्ति दी है, जिससे प्रभूत मात्रा में 'प्रवासी साहित्य' की रचना हुई है। अपनी मातृभूमि से मिलों दूर रहकर भी इन प्रवासियों ने अपनी मातृभाषा को भूलाया नहीं है, बल्कि इसके प्रति उनका आदरभाव व स्नेह और अधिक बढ़ा है। बहुत से प्रवासी साहित्यकारों ने हिन्दी को ही अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। उनके हिन्दी प्रेम का परिणाम है कि आज 'हिन्दी प्रवासी साहित्य' का बहुत बड़ा भण्डार निर्मित हो गया है। यह हिन्दी साहित्य बहुमुखी है। इसमें अपनी मिट्टी की सुगन्ध सर्वत्र भरी पड़ी है। ये प्रवासी साहित्यकार चाहे विदेशों में रहते हो, अपनी रोजी रोटी कहीं कमाते हो परन्तु इनके हृदय में देशप्रेम की भावना कूट–कूट कर भरी हुई है। इनके साहित्य को पढ़कर ज्ञात होता है कि इनका हृदय सदैव भारत के लिए ही धड़कता है।

देश प्रेम और प्रवासी हिन्दी साहित्य –

'भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमे रसधार नहीं,

हृदय नहीं है, वह पत्थर है, जिसमे स्वदेश का प्यार नहीं।'

हिन्दी कविता मे देशप्रेम की ऐसी गूंज सदैव से विद्यमान रही है। देश प्रेम का क्षेत्र बहुत व्यापक है। एक भौगोलिक सीमा से प्रेम करना ही देश प्रेम नहीं है। राष्ट्र भौगोलिक सीमा के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषा व साहित्यिक दृष्टि से भी अपना अस्तित्व रखता है। किसी राष्ट्र के अपने जीवन–मूल्य भी होते है। समग्रता में इन सभी के प्रति देशवासियों के हृदय में जो लगाव व अपनापन होता है, उसे ही देशप्रेम कहते है। जो अपने देश से प्रेम करता है, वह अपने समाज, संस्कृति, धर्म व जीवन मूल्यों के संरक्षण में तत्पर रहता है और उनकी संवृद्धि के लिए अपना सब कुछ न्यौछावार कर देता है, वहीं अपने देश को संकट ग्रस्त देखकर चिन्तित व दुखी होता है। वह सांस्कृतिक ह्रास व गिरते मानव मूल्यों को नहीं देख सकता है। इस प्रकार की स्थिति देखकर उसके हृदय में क्षोभ उत्पन्न होता है और उसकी अभिव्यक्ति यदा–कदा करता रहता है। यह भी सच है कि जिसके हृदय में देश–गौरव की भावना नहीं होती, उसके हृदय में देश प्रेम भी जागृत नहीं हो सकता।

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 6, June 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1206146 |

प्रवासी भारतीय अपने व्यवसाय या नौकरी की विवशता से किसी भी देश में रहे, पर उनके हृदय में देश प्रेम सदैव हिलोरें मारता रहता है। वे मीलों दूर रह कर भी अपनी मातृभूमि को भूल नहीं पाते बल्कि वह उन्हें और अधिक याद आती है। प्रवासी भारतीयों के हिन्दी साहित्य में उनका देश प्रेम छलकता हुआ दिखाई है। गद्य की अपेक्षा काव्य में तो यह प्रेम कुछ अधिक ही मुखरित हुआ है। त्रिनिदाद में बसी आशा मोर भारत को मॉ मानते हुए 'मां' कविता में लिखती है–

मां ने मुझको जन्म दिया, पिता ने मुझको पाला।

भारत मां का उपकार बड़ा है, सदैव गर्व से पहनाऊं माला।

भारत मां की गोद छोड़कर इस धरती मां पर आई हूं।

अपनी भाषा और संस्कृति की रक्षा करना।

यह संस्कार साथ में लाई हूं।

यदि आज भारत मां के लिए कुछ कर सकूं,

तो अपना जीवन सफल समझ सकूं।।

संस्कृति किसी भी देश की पहचान होती है। देश से प्रेम करने का अभिप्राय है उसकी सभ्यता व संस्कृति से प्रेम करना। भारतीय संस्कृति एक महान संस्कृति के रूप में जानी जाती है। प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अपनी संस्कृति व सांस्कृतिक विरासत पर गर्व रखते है। नार्वे में बसे डॉ० सुरेशचन्द्र अग्रवाल अपनी कविता 'धन्य भारतीय संस्कृति' में लिखते हैं–

धन्य भारतीय संस्कृति अपनी, प्रेम बहुत, अधिकार नहीं है।

विकास, भला सबका चाहे जो, ऐसा दावेदार नहीं है।

दूर देश में रहकर भी जो, राष्ट्र एकता प्रेम नहीं है।

लानत ऐसे जीवन को है, वह सच्चा भारत वीर नहीं है।

निष्पक्ष रूप से कहा जाये तो देश प्रेम की ऐसी भावना सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में विरल स्थानों पर ही दिखाई देती है। अग्रवाल जी विदेशों की चकाचौंध की अपेक्षा अपने गांव ही अच्छे लगते है। तभी तो दूर देश से आई चिट्ठी' में लिखते हैं–

भोले भाले गांव के लोग बाट जोहते

राह पर पलक बिछाये

दूर देश से आई चिट्ठी

पाती पा कर आज तुम्हारी

फूले नहीं समाये।

देश की मिट्टी की सुगन्ध प्रवासी हिन्दी साहित्य में सर्वत्र बिखरी पड़ी है क्योंकि भारत की मिट्टी से उन्हें अथाह प्रेम है। फ्रांस से हंसराज सिंह वर्मा 'कल्पहंस' 'मुट्ठीभर मिट्टी' कविता में लिखते है–

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 6, June 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1206146 |

मुट्ठी भर मिट्टी स्वदेशी, संग में अपने ले जाऊंगा।

उस अनजाने पराये देश में, कुछ अपना कुछ पहचाना ले जाऊंगा।।

संयुक्त अरब इमरात में बसे भारतीय हिन्दी कवि चन्द्रमोहन भण्डारी भारत की विशिष्टता को रेखांकित करते हुए 'मेरे हिन्दोस्ता, मेरे वतन' कविता में लिखते हैं–

सात रंगों के गुल, एकता के चमन,

मेरे हिन्दोस्तां, मेरे वतन।

जहां आसमा चूमता है तेरे कदम,

बाहें तेरी लुटाती प्यार का आलम,

तेरी अजमत संसार में होगी न कम।

तेरे खुशबू रहे अंजुमन–अंजुमन,

मेरे हिन्दुस्ता मेरे प्यारे वतन।

प्रवासी हिन्दी कविताओं में हमारे राष्ट्रीय पर्वों स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस की खनक भी मिलती है। ये पर्व राष्ट्रीय स्वार्थ–मान और संघर्ष के प्रतीक है। हंसराज सिंह वर्मा 'कल्पहंस' अपनी कविता 'आजादी' में लिखते हैं–

पर्व आजादी का फिर से आया,

तन मन पर खुमार खुशी का छाया।

देश प्रेम केवल महिमा गान तक सीमित नहीं होता है। अव्यवस्था, जन्य अन्याय, शोषण, भ्रष्टाचार व भेदभाव को देखकर रोष प्रकट होना भी देशप्रेम का स्वाभाविक लक्षण है। निश्चित रूप से भारत आज अव्यवस्था का शिकार है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय देखे गये सपने आज बुरी तरह चकनाचूर हुए हैं। प्रवासी साहित्य में देश की दुर्दशा पर चिन्ता व रोष के स्वर स्पष्ट सुनाई पड़ते हैं। 'कल्पहंस' लिखते हैं–

पर अफसोस, जज्बा और तड़प जो उपजे थे,

झंडा और शासक पाने को, बचा नहीं लेशमात्र भी उसका,

सच्ची आजादी पाने को।

सिंगापुर वासी दीपक वाईकर 'महाशक्ति देश' कविता में देश के खोखलेपन पर रोष प्रकट करते हुए कहते हैं–

पचास वर्षों की, है हमारी आजादी,

सौ करोड़ की, है हमारी आबादी,

नहीं दे पाये हम सबको, रोटी कपड़ा और मकान,

कैसे बताये हम, इस देश को महाशक्तिमान।

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 6, June 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1206146 |

अमेरिका से नीलम जैन लिखती हैं–

कोई गीत लिखूं कैसे सोचा/याद देश की बखान आई,

आज भी अपनों ने जाने दी/आज भी हमने घर खोये,

स्वतन्त्र देश की धरती पर/ये कैसी रीत चलाई,

पढ़–2 अखियां भर आई।

जिन्हें अपने देश से प्रेम होता है, वे शारीरिक रूप में चाहे कहीं रहें, पर मानसिक रूप से अपनी मिट्टी से जुड़े रहते हैं। इस मानसिक जुड़ाव को हम 'यादें' कहते है। प्रवासी हिन्दी साहित्य में अपने देश, समाज, गांव, मिट्टी व परिजनों की यादों की गूंज स्पष्ट सुनाई देती है। अमेरिका में बसे मुरादाबाद के साहिल लखनवी लिखते हैं–

वतन से दूर, अपनों से दूर,

गैर अजनबियों के बीच,

जब कभी अपनों की याद आ जाती है,

तब किसी तन्हा गोशें में जा कर रो लेता हूं।

जैसे किसी रेत में भरे मंजर इरेज कर रहा हूं,

पर ऐसा होता तो नहीं।

इग्लैण्ड वासी पेशे से डाक्टर अजय त्रिपाठी लिखते है–

है याद मुझे वो गलियारा, वो इक ऑगन वो चोबारा।

वो चंचल बहती शोख नदी, मादक समीर वो वन प्यारा।।

इग्लैण्ड के ही वासी बने महावीर शर्मा 'जब वतन छोड़ा' कविता में कहते हैं कि देश छूटने से उनकी पहचान का संकट उत्पन्न हो गया और अब वे अजनबी देश में अकेले हैं–

जब वतन छोड़ा सभी, अपने पराये हो गये,

आंधी कुछ ऐसी चली, नक्शे कदम भी खो गये।

हर तरफ ही शोर है, ये महफिले शेरो सुखन,

अजनबी इस भीड़ में, फिर भी अकेले हो गये।

आस्ट्रेलिया से ओम कृष्णा राहत 'भूली बिसरी यादों की' कविता में लिखते हैं–

भूली बिसरी यादों को, फिर से दिल में आज टटोलेंगे।

दुनियां ने जो फुर्सत दी तो, पल भर हम भी रो लेंगे।।

अखिलेश सिन्हा 'प्रेम' कविता में आंगन से दूर होने के कारण अपने को अनजाना सा पेड़ मानते हैं–

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
|| Volume 12, Issue 6, June 2023 ||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1206146 |

मेरे आंगन से दूर और रास्ते से अलग

कब से खड़ा वो अन्जाना सा पेड़!

आस्ट्रेलिया में व्यवसाय कर रहे फतेहगढ़ के अब्बास रजा अली 'फिर तेज हवा का' कविता में चिट्ठी पढ़ते हुए कहते हैं–

फिर तेज हवा का यह झोंका, सावन की याद दिलाता है।

शायद तुमने फिर याद किया, चिट्ठी का रंग बतलाता है।।

न्यू जर्सी में अध्यापक सुरेन्द्र नाथ तिवारी केवल मातृभूमि को याद करके ही चुप नहीं हो जाते बल्कि वापसी का ऐलान भी कर देते हैं–

आओ लौट चलें अब घर को

उस धरती पर धूल में जिसके

खेले बड़े हुए हम

उस चौखट पर जिसका दामन

थामें खड़े हुए हम।

कैलाश भटनागर भी 'परदेश की नगरी' कविता में 'परदेशी नगरी' के प्रति मोह भंग और अपनी मिट्टी के प्रति प्रेम को कुछ इस प्रकार व्यक्त करते हैं–

नगरी वालों मुबारक तुम्हें तुम्हारी नगरी,

मुझको मेरा देश, मेरे लोग खींचते हैं।

संयुक्त अरब इमरात में प्रवासी हिन्दी कवयित्री पूर्णिमा वर्मन को अपना गांव बहुत याद आता है जिसकी अभिव्यक्ति 'मेरे गांव में' नामक कविता में इस प्रकार व्यक्त करते हैं–

नगरी वालों मुबारक तुम्हें तुम्हारी नगरी,

मुझको मेरा देश, मेरे लोग खींचते है।

संयुक्त अरब अमीरात में प्रवासी हिन्दी कवयित्री पूर्णिमा वर्मन को अपना गांव बहुत याद आता है जिसकी अभिव्यक्ति 'मेरे गांव में' नामक कविता में इस प्रकार हुई है–

मेरे गाँव में कोई तो होगा,

कम्प्युटर पर बैठा मेरी राह देखता,

मेरी पाती पढ़ने वाला

मेरी भाषा मेरा दर्द समझने वाला

मेरी लिपि को मेरी तरह रचने वाला,

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 12, Issue 6, June 2023 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2023.1206146 |

मेरी मिट्टी की खुशबू में रचा बसा सा

मेरी सोच समझने वाला।

राष्ट्रभाषा किसी भी राष्ट्र की संप्रभुता की पहचान होती है। जो राष्ट्र से प्रेम करता है, उसे अपनी राष्ट्रभाषा से भी स्वाभाविक प्रेम होगा। प्रवासी हिन्दी कवि हिन्दी में काव्य रचना करके अपने हिन्दी प्रेम को ही प्रमाणित कर रहे हैं। इतना ही नहीं, उनकी कविता में भी हिन्दी प्रेम की अभिव्यक्ति भी मिलती है। वे हिन्दी की सेवा आत्मिक सुख का विषय मानते है। इंग्लैण्ड में बसे तेजेन्द्र शर्मा 'हिन्दी की दुकानें' कविता में लिखते हैं...

हम उनके करीब आए

और उनसे कहा/भाई साहब,

हिन्दी की दो पुस्तकों का विमोचन है,

यदि आप आ सके/और संग औरों को भी ला सकें।

तो हिन्दी की भी होगी भलाई

और हो जायेगा प्रसन्न

हमारा तन और मन।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि प्रवासी हिन्दी कवियों के ह्रदय में देशप्रेम की भावना सरोवर में निर्मल जल की भांति भरी हुई है, जिसकी निश्छल अभिव्यक्ति उनके काव्य में मिलती है। वे अपनी मिट्टी से अथाह प्रेम करते है और सदैव उससे जुड़े रहना चाहते है। उनके काव्य से आभास होता है कि उन्हें रह–रह कर अपने देश व देशवासियों की याद आती है और वे अपनी मातृभूमि पर लौट आना चाहते है। देश की दुर्दशा व शोषण पर प्रवासी हिन्दी कवियों ने क्षोभ व रोष प्रकट किया है। प्रवासी हिन्दी कवियों को अपनी संस्कृति की महानता पर गौरव व गर्व है, जिसकी निसंकोच अभिव्यक्ति उनकी वाणी में मिलती है। प्रवासी हिन्दी कविता में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति प्रेम प्रदर्शित किया गया है जो देशप्रेम का अन्यतम उदाहरण है। अतः हम कह सकते हैं कि प्रवासी हिन्दी कविता देश प्रेम का गीत है।

संदर्भ–

1. डॉ. कामता कमलेश : सागर पार भारतीय संस्कृति और हिन्दी, शिल्पायन, दिल्ली।
2. सम्पादक डॉ० (श्रीमती) विनोद बाला अरुण, विश्व हिन्दी पत्रिका, विश्व हिन्दी सचिवालय, मॉरीशस, 2009
3. वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत–हिन्दी कोश, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 1999
4. सम्पादक रामचन्द्र पाठक, आदर्श हिन्दी शब्दकोश, भार्गव बुक डिपो, वाराणसी, 2009
5. http://www.srijangathe.com/Hindi/Wishwa/Dec.2k8
6. teamabhi@abhivvakkti&hindi.org
7. www.anubhuti.org

INNO SPACE

SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 8.423

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

Scan to save the contact details